अमर उजाला
07 अप्रैल, 2017

प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत हुए प्रतिभागी

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून।

वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में आयोजित 19 वें राष्टमंडल वानिकी सम्मेलन में भाग लेने आए प्रतिभागी उत्तराखंड के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अभिभूत हो गए। सम्मेलन के चौथे दिन बृहस्पतिवार को प्रतिभागियों ने राजाजी राष्ट्रीय पार्क और धनोल्टी का भ्रमण किया। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को उत्तराखंड के प्राकृतिक सौंदर्य से अवगत करना था।

राजाजी राष्ट्रीय पार्क में प्रतिभागियों के पहुंचने पर मुख्य वन्यजीव वार्डन एके शर्मा ने उनका स्वागत किया। उन्होंने प्रतिभागियों को पार्क की भौगिलिक स्थिति एवं जैव विविधता के बारे में अवगत कराया। प्रतिभागियों ने पार्क में वन्य जीवन तथा पादप विविधता का अवलोकन किया एवं संबंधित जानकारी प्राप्त की। प्रतिभागी पार्क की अनुपम वानस्पतिक एवं बड़ी संख्या में वन्य जीवों की उपस्थिति को देखकर प्रभावित हुए। इसके बाद प्रतिभागियों ने धनोल्टी का भ्रमण किया। मार्ग में उन्होंने साॅल के वनों के मध्य स्थित देहरादून जू का भी दौरा किया।

धनोल्टी स्थित इको पार्क में पौधरोपण करते विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधि।

इसके बाद यह प्रतिभागियों का समूह सुआखोली स्थित अग्नि-नियंत्रण स्टेशन कक्ष में गया तथा मसूरी के वनों के चारों ओर वनाग्नि प्रबंधन के तरीकों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने चीड़-देवदार तथा ओक वनों को भी देखा। इसके बाद

राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में भाग लेने आए प्रतिभागियों ने राजाजी पार्क का किया दौरा

वे धनोल्टी पहुंचे जहां उन्होंने पहाड़ों की शांति, शीतल बहारों का आनंद उठाया। प्रतिभागी धनोल्टी इको-पार्क भी गए तथा वहां की प्राकृतिक सुंदरता का अवलोकन किया। वहां उन्होंने इको-डेवलपमेंट कमेटी के सदस्यों के साथ विचार विमर्श किया तथा विदेशी प्रतिभगियों ने इको पार्क में बुरांस के पौधे भी लगाए।

दून दर्पण
07 अप्रैल, 2017

वन्यजीवों की प्रजातियों व स्थलों के प्रबंधन से कराया अवगत

दर्पण संवाददाता

देहरादून,छह अप्रैल। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में आयोजित हो रहे 19 वें राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन के चौथे दिन वन क्षेत्रों के भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया। प्रतिभागियों को राजाजी राष्ट्रीय पार्क तथा धनोल्टी ले का भ्रमण कराया गया। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को घाटियों पर्वतों भू-दृश्यों वनों एवं वन्यजीवों की प्रजातियां तथा इन स्थलों के प्रबंधन से अवगत कराना था।

राजाजी राष्ट्रीय पार्क गमन के मार्ग स्थल में प्रतिभागियों ने देहरादून–ऋषिकेश मार्ग के किनारे वनों के मनोरम दृश्य का आनन्द किया। उनके पार्क आगमन पर श्री ऐके.शर्मा, मुख्य वन्यजीव वार्डन ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा पार्क की भौगिलिक क्षेत्र एवं जैव विविधता के बारे में अवगत कराया। प्रतिभागियों ने पार्क में वन्यजीवन तथा पादप विविधता का अवलोकन किया एवं सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की। प्रतिभागी पार्क की अनुपम वानस्पतिक एवं बड़ी संख्या में वन्य जीवों की उपस्थिति को देखकर प्रभावित हुए। पार्क में साल वृक्ष की 120 से भी अधिक प्रजातियां, आर्किड की 36 प्रजातियां, 50 प्रजातियां घासों, दलदली पौधों तथा रस से भरपूर सुन्दर पुष्पों, 150 अति सुन्दर तितलियों, स्तनधारियों की 49 प्रजातियां, 26 रेंगने वाले जीव–जन्तुओं तथा सांपों की प्रजातियां, 10 से भी अधिक मछलियों की प्रजातियां, शहद बनाने वाली मधुमक्खियों की 6 प्रजातियां, 21 प्रजातियां दीमक तथा 315 चिड़ियों की प्रजातियों की जानकारी प्राप्त कर सभी प्रतिभागीगण अत्यन्त प्रभावित हुए।

इको पार्क में बुरांश का पौधारोपण करते हुए विदेशी प्रतिभागी। छाया दर्पण

उन्होंने इस अद्वितीय पार्क की इस नजरिये से प्रशंसा की कि इसमें दक्षिण–पश्चिम सीमा के रायॅल बंगाल, टाइगर, एशियाई हाथी, ग्रेट पाईड, हार्नबिल, गोल्डन फ्रंटेड लीफ बर्ड इत्यादि पाये जाते है तथा यहाँ असंख्य शाकाहारी एवं मांसाहारी जानवरों का प्राकृतिक आवास भी है। मुख्य वन्यजीव वार्डन ने बताया कि पार्क में 2016 में बाघों की संख्या 32 आंकी गई थी। प्रतिभागियों ने पार्क की पहचान जीव–जन्तु एवं वनस्पतियों की शोध अध्ययन के साथ ही इको–टूरिज्म के रूप में की। बाघों, हाथियों की तेंजी से घटती संख्या तथा वन्यजीव एंवं पौधों की जैव विविधता के घटते स्तर पर अपनी चिन्ता व्यक्त की।

इसके बाद उन्होंनें धनोल्टी का भी भ्रमण किया। मार्ग में उन्होंने सॉल के वनों के मध्य स्थित देहरादून जू का भी दौरा किया जिसमें तेंदुए, हिरण तथा चिड़ियों की विभिन्न प्रजातियों एवं अन्य वन्य जीवों का एक सीमित संकलन है। इसके बाद यह प्रतिभागियों का समूह सुआखोली स्थित अग्नि–नियंत्रण स्टेशन कक्ष में गया तथा मसूरी के वनों के चारों ओर वनाग्नि प्रबंधन के तरीकों की जानकारी प्राप्त की। उन्होनें चीड़–देवदार तथा बन ओक वनों को भी देखा। इसके उपरान्त वे धनोल्टी पहँचे जहाँ उन्होनें पहाड़ों की शान्ति, शीतल बहारों का आनन्द उठाया। वे धनोल्टी इको–पार्क भी गये तथा वहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता का अवलोकन किया। वहाँ उन्होनें इको–डेवलप्रमेंट कमेटी के सदस्यों के साथ विचार विमर्श किया तथा विदेशी प्रतिभगियों ने इको पार्क में बुराँस के पौधे भी लगाये।

हिन्दुस्तान
07 अप्रैल, 2017

विशेषज्ञों ने जानीं राज्य की जैव विविधता

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

एफआरआई में चल रहे 19वें राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन के तहत गुरुवार को राष्ट्रमंडल के विशेषज्ञों ने उत्तराखंड की जैव विविधता जानी।

सम्मेलन के तहत चौथे दिन विशेषज्ञों के लिए राजाजी नेशनल पार्क और धनोल्टी टूर आयोजित किया गया। टूर का उद्देश्य प्रतिभागियों को घाटियों, पर्वतों, भू-दृश्यों, वनों एवं वन्यजीवों की प्रजातियों तथा इनके प्रबंधन की जानकारी देना था।

50 से अधिक प्रजातियां है दलदलीय पौधों की राजाजी पार्क में

49 से अधिक प्रजातियों के स्तनधारी करते है पार्क में विचरण

26 प्रजातियां रेंगने वाले जीव जंतुओं और सांपों की

देहरादून जू में देखे तेंदुए और हिरन

प्रतिभागियों को देहरादून जू का भ्रमण करवाया गया। जू में उन्होंने तेंदुए, हिरण तथा चिड़ियों की विभिन्न प्रजातिया देखी। इसके बाद प्रतिभागियों का समूह सुआखोली स्थित वन विभाग के फायर कंट्रोल आफिस पहुंचा। जहां मसूरी और आसपास लगने वाली आग के नियंत्रण की जानकारी ली। उन्होंने चीड़ और देवदार के जंगल भी देखे।

राजाजी नेशनल पार्क में मौजूद हैं 32 बाघ

मुख्य वन्यजीव वार्डन एके शर्मा ने बताया कि राजाजी नेशनल पार्क में 2016 में बाघों की संख्या 32 आंकी गई थी। प्रतिभागियों ने पार्क की पहचान जीव-जन्तु एवं वनस्पतियों के शोध अध्ययन के साथ ही इको-टूरिज्म के रूप में की। साथ ही पार्क में बाघों व हाथियों की तेजी से घटती संख्या तथा वन्यजीव एवं पौधों की जैव विविधता के घटते स्तर पर भी चिन्ता व्यक्त की।

राष्ट्रीय सहारा
07 अप्रैल, 2017

वनविदों ने किया राजाजी पार्क का भ्रमण

देहरादून। राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन (सीएफसी) के चौथे दिन बृहस्पतिवार को देश-विदेश के प्रतिभागी वनविदों ने वन क्षेत्रों का भ्रमण किया। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय व राष्ट्रमंडल वानिकी संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय सम्मेलन का समापन शुक्रवार को होगा। इससे पहले प्रतिभागियों ने आज सबसे पहले राजाजी राष्ट्रीय पार्क का भ्रमण किया। पार्क में मौजूद विभिन्न पादप प्रजातियों व वन्यजीवों को देख प्रतिभागी गदगद हुए। पार्क के मुख्य वन्यजीव वार्ड एके शर्मा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। बताया कि वर्ष 2016 में राजाजी पार्क में बाघों की संख्या 32 पाई गई।वहीं वनविदों ने बाघों व हाथियों की घटती संख्या के साथ ही वन्यजीवों व पौधों की जैव विविधता के घटते स्तर पर चिंता जताई। राजाजी पार्क के बाद प्रतिभागियों ने धनौल्टी का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने देहरादून मिनी जू व सुआखोली स्थित अग्नि नियंत्रण कक्ष का भ्रमण भी किया। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए जगह-जगह पौधरोपण भी किया गया।

THE HIMACHAL TIMES
07 April, 2017

CFC delegates visit Rajaji Park, Dhanaulti

DEHRADUN, APRIL 6 (HTNS)

On the 4th Day of 19th Commonwealth Forestry Conference being held at Forest Research Institute, a conference tour was organized as excursion tour. Delegates were taken to Rajaji National Park and Dhanaulti to let them witness the natural beauty of valley, mountains, landscapes, forests and wildlife.

On the way to Rajaji National Park, the delegates enjoyed watching the panoramic view of the forests along Dehradun-Rishikesh highway. On their arrival to the Park, AK Sharma, Chief Wildlife Warden welcomed the delegates and explained about the geographical area and biodiversity of the park. The delegates explored wildlife and plant diversity in the park. They fascinatingly watched the rich floral vegetation and faunal richness of the Park. They were amazed to see and learn that the Park holds more than 120 species of trees, dominated by Sal, 36 species of orchids, 50 species of grass and sedges, beautiful nectar-bearing flowers, 150 species of magnificent butterflies, 49 species of mammals, 26 species of reptiles and snakes, over 10 species of amphibians, 42 species of fish, 6 species of honeybees, 21 species of termites and 315 species of birds.

They appreciated the uniqueness of the Park in the sense that it is the northwestern limit of Royal Bengal Tiger, Asiatic elephants, some birds like Great Pied, Hornbill, Golden Fronted Leaf Bird, etc., and is a natural home of significant number of herbivore and carnivore animals.

As per 2016 census, population of 32 tigers was noted in the park as informed by the Chief Wildlife Warden.

The delegates recognized the value of the Park in terms of exploration studies of flora and fauna and eco-tourism as well. They expressed their concern over the dwindling population of tigers, elephants and biodiversity of wild animals and plants.

Dhanaulti was another popular destination of the excursion tour. On the way, the delegates visited Dehradun Zoo located amidst Sal Forest with a small collection of wild animals such as leopard, different species of deer and birds. Then the excursion group travelled to fire station control room at Suakhol and got ideas on forest fire management around Mussoorie forests. They also watched the panoramic view of Chir, Pine and Ban Oak forests.

Afterwards, the delegates visited Dhanaulti where they experienced quietness of the hills, the stillness in the air and the fresh breeze. They also visited Dhanaulti Eco-Park, explored the natural beauty, and interacted with the executive members of Eco-Development Committee. Foreign delegates planted sapling of Buransh (Rhododendron arboretum) in the Eco-park.

I- NEXT
07 April, 2017

देहरादून के Wildlife को करीब से जाना

PIC: DAINIK JAGRAN-INEXT

- देश-विदेश के प्रतिभागी पहुंचे राजाजी पार्क व धनौल्टी
- 19वां राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन का आज होगा समापन

प्रतिनिधियों को जानकारी देते वाइल्ड लाइफ वार्डेन.

DEHRADUN(6 April): एफआरआई में चार दिन से चल रहे 19वें राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन के चौथे दिन मौजूद प्रतिनिधियों ने वन क्षेत्रों का भ्रमण किया. जिसमें राजाजी राष्ट्रीय पार्क व धनौल्टी शामिल रहा. भ्रमण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को घाटियों, पर्वतों, भू-दृश्यों, फॉरेस्ट व वाइल्ड लाइफ की प्रजातियों के साथ इन स्थलों के प्रबंधन से अवगत कराना प्रमुख था.

जंगलों के बारे में दी जानकारी

राजाजी पार्क मार्ग पर प्रतिभागियों ने देहरादून-ऋषिकेश के बीच वनों का भी अवलोकन किया. पार्क पहुंचने पर चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डेन एके शर्मा ने पार्क की भौगिलिक क्षेत्र व बायोडाइवर्सिटी के बारे में जानकारी दी. पार्क में साल वृक्ष की 120, आर्किड की 36, घास की 50, दलदली पौधों व फ्लावर्स के साथ बटरफ्लाई की 150, स्तनधारियों की 49, रेंगने वाले जीव-जन्तुओं की 26 और सांप, मछलियों, मधुमक्खियों दीमक के साथ 315 से अधिक बर्ड्स की प्रजातियों की जानकारियां हासिल की. इस दौरान देश-विदेश से पहुंचे प्रतिभागियों ने प्रशंसा की कि पार्क में दक्षिण-पश्चिम सीमा के रायॅल बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी, ग्रेट पाईड, हार्नबिल, गोल्डन फ्रंटेड लौफ बर्ड पाए जाते हैं. चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डेन ने बताया पार्क में 2016 में बाघों की संख्या 32 आंकी गई थी. बाघों, हाथियों की घटती संख्या और वाइल्ड लाइफ के साथ पौधों की जैव विविधता के घटते स्तर पर चिंता व्यक्त की गई.

दैनिक जागरण
07 अप्रैल, 2017

शोध कार्यों के लिए उपयुक्त राजाजी पार्क

जागरण संवाददाता, देहरादून: राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन के तहत देश-विदेश से आए वन विशेषज्ञों ने राजाजी राष्ट्रीय पार्क का भ्रमण किया। यहां की जैवविविधता से विशेषज्ञ काफी प्रभावित हुए। उन्होंने विभिन्न आयामों पर किए गए आकलन के बाद पार्क को शोध कार्यों के लिए पूरी तरह उपयुक्त बताया।

गुरुवार को पार्क भ्रमण के दौरान मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक एके शर्मा ने विशेषज्ञों को बताया कि यहां साल के पेड़ों की 120 से भी अधिक प्रजातियां हैं। वहीं, चिड़ियों की 315, पार्क आर्किड की 36, विभिन्न घासों की 50, तितलियों की 150, स्तनधारी जीवों की 49, रेंगने वाले जीवों की 26, सांपों की 10 से अधिक, मधुमक्खियों की छह व दीमक की 21 प्रजातियां हैं। वनस्पतियों व जीवों की इस विविधता पर संतोष व्यक्त करते हुए विशेषज्ञों के कहा कि वन प्रबंधन की दिशा में तमाम शोध के लिए पार्क उपयुक्त स्थल है। इसके साथ ही पार्क को ईको-टूरिज्म के लिए भी आदर्श स्थल बताया गया।

बाद में विशेषज्ञों का दल धनोल्टी के लिए रवाना हुआ। वहां पर दल ने सुवाखोली स्थित अग्नि नियंत्रण स्टेशन का मुआयना किया और मसूरी के चारों तरफ जंगल की आग प्रबंधन के कार्यों की जानकारी हासिल की। इसके साथ ही विशेषज्ञों ने धनोल्टी ईको पार्क का भ्रमण किया और ईको डेवलपमेंट कमेटी के सदस्यों के साथ विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया।

सम्मेलन

- राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन के तहत विशेषज्ञों ने किया राजाजी का भ्रमण
- देश-विदेश से आए विशेषज्ञ पार्क की जैवविविधता से हुए रूबरू

संख्या पर चिंता

राजाजी राष्ट्रीय पार्क में बाघों व हाथियों की घटती संख्या पर वन विशेषज्ञों ने चिंता भी जाहिर की। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य सरकार को इस दिशा में ठोस कार्य योजना बनानी चाहिए।

दैनिक जागरण
07 अप्रैल, 2017

पहाड़ के तिमला में मिला कैंसर का इलाज

पहाड़ी फल के तेल में मिले कई गंभीर रोगों से लड़ने वाले चार फैटी एसिड

जागरण विशेष

सुमन सेमवाल, देहरादून

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाने वाला मामूली फल तिमला बड़े काम का निकला है। जिस तिमला की फलों में कहीं भी प्रमुखता से गिनती नहीं की जाती, उसके भीतर कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की रोकथाम के गुण मौजूद हैं। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) की केमेस्ट्री डिविजन के शोध में पता चला कि तिमला के तेल में चार ऐसे फैटी एसिड हैं, जिनसे कैंसर समेत अन्य बीमारियों का इलाज संभव है। इस शोध का प्रस्तुतीकरण दून में चल रहे 19वें राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में किया गया।

केमेस्ट्री डिविजन के वरिष्ठ विज्ञानी वाईसी त्रिपाठी के मुताबिक वनस्पति विज्ञान में तिमला को 'फिकस ऑरिकुलाटा' नाम से जाना जाता है। पारंपरिक रूप से से तिमला का नाम औषधीय गुणों के लिए लिया जाता रहा है, लेकिन अब तक यह पता नहीं था कि इस फल में कौन-कौन से तत्व मौजूद हैं। इसी जानकारी के लिए विभिन्न स्थानों से फलों के सैंपल लिए गए और इनका तेल निकाला गया।

जांच में चौंकाने वाली बात पता चली कि तमाम औषधीय निर्माता कंपनी जिन तत्वों की मदद से कैंसर, हृदय रोग, कोलेस्ट्रोल का स्तर कम करने के लिए दवा बनाती हैं, वह सभी इसमें मौजूद हैं।

वरिष्ठ वैज्ञानिक त्रिपाठी के मुताबिक राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में इस शोध के रखे जाने के बाद देश-विदेश की दवा निर्माता कंपनियों का ध्यान तिमला की तरफ जाएगा। यदि तिमला के तेल से दवाओं का निर्माण किया जाएगा तो बहुत संभव है कि गंभीर रोगों की दवाओं की कीमत भी कम होगी, क्योंकि कच्चे माल के रूप में तिमला पर्वतीय क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

तिमला में पाए गए फैटी एसिड

- वैसीसिनिक एसिड (इसमें कैंसररोधी क्षमता मौजूद होती है)
- ए (अल्फा) लाइनोलेनिक एसिड (दिल की विभिन्न बीमारियों के इलाज में कारगर)
- लाइनोलेनिक एसिड (दिल की धमनियों के ब्लॉकेज हटाने में सहायक)
- ऑलिक एसिड (लो-डेंसिटी लाइपोप्रोटीन की मात्रा शरीर में कम करता है, इस प्रोटीन से कोलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ता है)

शोध-अनुसंधान

- एफआरआइ की केमेस्ट्री डिविजन के शोध में सामने आया नया तथ्य
- राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन में किया गया शोध का प्रस्तुतीकरण

1.76 फीसद मिलता है तेल

इस अध्ययन में बतौर शोधार्थी शामिल रही निशात अंजुम ने बताया कि प्रयोगशाला जांच में तिमला के फल में 1.76 फीसद तेल पाया गया। यह मात्रा दवा निर्माण के लिए पर्याप्त है। इसके अलावा फल को भी खाने पर बीमारियों से बचाव संभव है। उन्होंने उम्मीद जताई कि शोध के बाद इस फल को बढ़ावा मिलेगा और आसानी से सुलभ होने पर लोग प्राकृतिक रूप से भी इसका लाभ उठा सकेंगे।

GARHWAL POST
07 April, 2017

CFC delegates visit Rajaji National Park, Dhanaulti

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 6 Apr: On the 4th Day of 19th Commonwealth Forestry Conference being held at Forest Research Institute, here, a in-conference tour was organised. Delegates were taken to Rajaji National Park and Dhanaulti to let them witness the natural beauty of valley, mountains, landscapes, forests and wildlife.

On the way to Rajaji National Park, the delegates enjoyed watching the panoramic view of the forests along the Dehradun-Rishikesh highway. On their arrival at the Park, AK Sharma, Chief Wildlife Warden, welcomed the delegates and explained the geographical area and biodiversity of the park. Afterwards, delegates viewed the wildlife and plant diversity at the park.

They were amazed to see and learn that the Park holds more than 120 species of trees, dominated by Sal, 36 species of orchids, 50 species of grasses and sedges, beautiful nector-bearing flowers, 150 species of magnificent butterflies, 49 species of mammals, 26 species of reptiles and snakes, over 10 species of amphibians, 42 species of fish, 6 species of honeybees, 21 species of termites and 315 species of birds. They appreciated the uniqueness of the Park in the sense that it is the north-western limit of the Royal Bengal Tiger, Asiatic elephants, some birds like great pied, hornbill, golden fronted leaf bird, etc., and is a natural home of a significant number of herbivore and carnivore animals. As per the 2016 census, population of 32 tigers were noted in the park according to the Chief Wildlife Warden. The delegates recognised the value of the Park in term of exploration studies of flora and fauna and eco-tourism as well. The delegates expressed concern at the dwindling population of tigers, elephants and biodiversity of wild animals and plants.

Dhanaulti was another popular destination of the excursion tour. On the way, the delegates visited Dehradun Zoo located amidst a Sal Forest with a small collection of wild animals such as leopard, different species of deer and birds. Then the excursion group travelled to the fire station control room at Suakhol and learnt about forest fire management around Mussoorie forests. They also watched the panoramic view of Chir pine and Ban Oak forests. Afterwards, the delegates visited Dhanaulti where they experienced quietness of the hills, the stillness in the air and the fresh breeze. They also visited Dhanaulti Eco-Park and explored the natural beauty and interacted with the executive members of the Eco-Development Committee. Foreign delegates planted sapling of Burans (Rhododendron arboretum) in the Eco-park.